P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-XI*July-2016

महर्षि वात्स्यायन के त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ और काम) सम्बन्धी विचारों का अध्ययन

अनिल कुमार
असिस्टेन्ट टीचर,
बेसिक शिक्षा विभाग
जे0एच0एस0 सिहानी,
फरीदपुर, अलीगढ़

सारांश

प्रस्तुत शोध महर्षि वात्स्यायन के त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ और काम) सम्बन्धी विचारों का संचयन, वर्गीकरण तथा निवर्चन करना है। महर्षि वात्स्यायन के त्रिवर्ग सम्बन्धी विचारों को भारतीय संदर्भ में अध्ययन कर उनकी प्रासंगिकता का पता लगाना था। इस अध्ययन के लिए अंगीकृत प्रक्रिया इस आधारभूत मान्यता पर आधारित है कि किसी भी विचारक की जीवन परिस्थितियाँ उसके त्रिवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ और काम सम्बन्धी विचारों का निर्धारण करती है। अध्ययन से निम्न निष्कर्ष सामने आते हैं।

महर्षि वात्स्यायन ने भारतीय सनातन संस्कृति के चारों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का वर्णन किया है। परन्तु उनके त्रिवर्ग सम्बन्धी विचार जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी है। क्योंकि वास्तविक जीवन में मनुष्य धर्म, अर्थ और काम का ही प्रयोग करता है। मोक्ष तो जीवन से परे की चीज है। धर्म, अर्थ और काम मानव जीवन की प्रथम एवं अनिवार्य आवश्यकता है। सांसारिक सुख ही मानव जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है जो कि त्रिवर्ग के ज्ञान पर निर्भर है। धर्म, अर्थ और काम की तुलनात्मक श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है कि काम से श्रेष्ठ अर्थ है तथा अर्थ से श्रेष्ठ धर्म है। अर्थात् अर्थ, धर्म और काम को एक–दूसरे से बाँधकर उनका सेवन इस प्रकार से करना चाहिए कि एक पुरुषार्थ दूसरे में बाधक न होकर साधक हो, ऐसा ही कार्य उचित और शास्त्र समर्थित होता है।

मुख्य शब्द : त्रिवर्ग – धर्म, अर्थ तथा काम; **त्रिवर्ग का ज्ञान** – धर्म, अर्थ तथा काम का ज्ञान प्राप्त करने के साधन; **त्रिवर्ग प्राप्ति** – त्रिवर्ग प्राप्ति के उपाय विधियाँ; **त्रिवर्ग सिद्धि** – त्रिवर्ग सिद्ध का स्वरूप तथा आत्मसिद्धि।

प्रस्तावना

महर्षि वात्स्यायन या मल्लंग वात्स्यायन भारत के एक प्राचीन दार्शनिक थे। जिनका समय गुप्तवंश के छठी से आठवीं शताब्दी माना जाता है। इन्होंने कामसूत्र तथा न्यायशास्त्र की रचना की थी। महर्षि वात्स्यायन का जन्म बिहार में हुआ था। महर्षि वात्स्यायन ने कामसूत्र में न केवल दाम्पत्य जीवन का श्रृंगार किया है वरन् कला, शिल्पकला एवं साहित्य को भी सम्पादित किया है। अर्थ के क्षेत्र में जो स्थान कौटिल्य का है, काम के क्षेत्र में वही स्थान महर्षि वात्स्यायन का है।

शैक्षिक अनुसंधानों में अब तक जो कार्य हुआ है उसमें महर्षि वात्स्यायन के कार्य की सदैव ही उपेक्षा रही है। कारण है कि इनके कार्य को केवल 'काम' तक ही सीमित माना गया और नैतिक तथा सामाजिक नियमों और आदर्शों के प्रभाव के कारण यह व्यवहारिक ज्ञान का सागर अब तक लोगों के लिये उपेक्षा का पात्र रहा है। महर्षि वात्स्यायन ने भारतीय सनातन संस्कृति के चारों पुरुषार्थों का वर्णन किया है परन्तु उन्होंने अर्थ, धर्म और काम को मानव जीवन की प्राथमिक आवश्यकतायें तथा मोक्ष के लिये साधन के रूप में समझा है। महर्षि मनु पुरुषार्थ चतुष्टय के प्रतिपादक हैं जिसमें अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष यह चार पदार्थ या पुरुषार्थ सम्मिलित हैं। महर्षि वात्स्यायन भी मनु के पदार्थ चतुष्टय के समर्थक हैं किन्तु वे मोक्ष तथा परलोक की अपेक्षा धर्म, अर्थ, काम पर आधारित सांसारिक जीवन को सर्वोपरि मानते हैं। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि इसी प्रकार की अवधारणा का अनुसरण करते हुए पश्चिमी विचारक अब्राहम मैसलो ने आवश्यकताओं का पदानुक्रम निश्चित किया है और यह बताया है कि शारीरिक सुरक्षा तथा प्रेम की आवश्यकता पूर्ति के बिना कोई भी व्यक्ति आत्मसिद्धि (Self Actualization) नहीं कर सकता। महर्षि वात्स्यायन से पहले धर्मवर्ण की प्रतिबोध मनु द्वारा तथा अर्थवर्ण की कौटिल्य द्वारा हो चुका था। इसलिये मानव जीवन को सुखमय तथा सुन्दर बनाने के लिये वात्स्यायन ने

कामसूत्र की रचना की। अतः कामसूत्र में अर्थ तथा धर्म के साथ–साथ दर्शन के विचारों का समावेश हो गया है परन्तु प्रमुखता कामशास्त्र की ही है और इसी पर अधिक बल दिया गया है।

महर्षि वात्स्यायन के अनुसार सांसारिक सुख ही मानव–जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है। जो धर्म, अर्थ तथा काम अर्थात् त्रिवर्ग के अनुष्ठान अर्थात् प्राप्ति अर्थात् अवबोध अर्थात् त्रिवर्ग के ज्ञान और सम्प्रतिपत्ति अर्थात् त्रिवर्ग के अधिकार पर निर्भर करता है। प्रस्तुत शोध लेख में इन्हीं त्रिवर्गों पर विचार किया गया है।

उद्देश्य

महर्षि वात्स्यायन के त्रिवर्ग सम्बन्धी विचारों का अध्ययन तथा उनकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता।

महर्षि वात्स्यायन द्वारा प्रतिपादित त्रिवर्ग

महर्षि वात्स्यायन के त्रिवर्ग सम्बन्धी विचारों को निम्न तीन भागों में विभाजित कर अध्ययन किया जा सकता है

1. त्रिवर्ग का ज्ञान
2. त्रिवर्ग प्राप्ति के उपाय
3. त्रिवर्ग की सम्प्रतिपत्ति (सिद्ध)

त्रिवर्ग का ज्ञान

त्रिवर्ग की सिद्ध के क्रमों को स्पष्ट करते हुये महर्षि वात्स्यायन कहते हैं कि सर्वप्रथम मनुष्य को त्रिवर्ग का ज्ञान होना चाहिये। इसको स्पष्ट करते हुये वात्स्यायन कहते हैं कि **धर्म–अलौकिकत्वाद दृष्ट्रार्थत्वाद प्रवृत्तानां यंज्ञादीना शास्त्रात्पवर्तनम लौकित्वदृष्टार्थ त्वाच्च प्रवृत्तेभ्यश्व मास भक्ष्णादिश्यः शास्त्रादेय निवारणं धर्मः।** अर्थात् अलौकिक एवं फल के अदृष्ट होने से अप्रवृत्त यज्ञादिकों का शास्त्र से प्रर्वतन होता है।

लौकिक होने से तथा प्रत्यक्ष फल वाले होने के कारण प्रवृत्त माँस भक्षणादि से शास्त्र से ही निवारण होता है। यही धर्म है। उस धर्म को श्रुत से तथा धर्मज्ञ समवाय से जाना जाय। पंडित माध्वाचार्यजी के मतानुसार लौकिक तथा अलौकिक दो प्रकार के पदार्थ होते हैं। लौकिक जिनको देखा जा सकता है तथा अलौकिक दिखाई नहीं देते हैं। जो अद्रव्य फल वाले अलौकिक हैं। उनमें बुद्धिमान मनुष्य ऐसे प्रवृत्त नहीं होते जैसे कि अदृश्य सामर्थ्यवाली औषधियों में प्रवृत्त होते हैं। इस कारण यज्ञ आदि के साथ अप्रवृत्त विशेषण लगाकर अप्रवृत्त कहा गया है। आदि शब्द से तपश्चर्या आदि धार्मिक कृत्यों का ग्रहण होता है। उन अप्रवृत्त तपश्चर्या आदि का शास्त्र से प्रवृत्न होना ही धर्म है। यह प्रवृत्ति रूप धर्म है जो कि तृप्ति आदि प्रत्यक्ष फलवाले होकर लौकिक है। आचार्य रामचन्द्र वर्मा शास्त्री के अनुसार, धर्म एक नियामक तत्व है उसके दो रूप हैं

(1) प्रवृत्ति,
(2) निवृत्ति।

परमार्थिक तथा परोक्ष फल देने वाले यज्ञ आदि कर्मों में शीघ्र प्रवृत्व न होने वाले मनुष्य को आदेश के स्वर में इन कार्यों में उन्मुख करना प्रवृत्ति कहलाता है तथा लोक में प्रत्यक्ष परिणाम दिखाने वाले माँस आदि अभक्ष्य पदार्थ को खाने से मनुष्य को वराङमुख करना 'निवृत्ति' कहलाती है।

अर्थ

महर्षि वात्स्यायन के अनुसार,**''तं श्रुतेधर्म सम भाव याच्य प्रतिपद्येतः'', ''विद्याभूमिहिरष्य पशुधान्य भाण्डोपस्कर मित्रा दोना मर्जनमर्जितस्य विविधर्मनार्थ।''** इस सूत्र के अनुसार विद्या, भूमि, हिरण्य, पशु तथा धान्य मण्डोपस्कर तथा मित्र आदि को सम्पादन करना तथा अर्जित का वर्धन करना अर्थ है। अर्थ को अध्यक्ष प्रचार से वार्ता (कृषि तथा वाणिज्य) के तत्ववेत्ताओं में से और वणिकों से सीखें। पंडित माध्वाचार्य ने इस सूत्र की समीक्षा करते हुये लिखा है कि कृषि योग्य भूमि, सोना, चाँदी आदि को हिरण्य कहा जाता है। हाथी, घोड़े, गऊ, भैंस आदि को पशु कहा गया है। धान्य शब्द ब्रीहि के पर्याय में आया है और कहीं–कहीं बोई जाने वाली फसलों के सम्बन्ध में आया है। इसमें ब्रीहि, यव, मसूर, गौधूम, मूँग, उड़द, तिल, चना, चीनी, कांगुरी, कोदू सत्तर शब्दों का धान्य शब्द से ग्रहण किया गया है। मित्र को भी दो प्रकार का माना गया है कार्य मित्र तथा सहज मित्र। अर्थ अर्जन के सम्बन्ध में साध्वाचार्य का मत है कि अर्जन दो प्रकार का होता है एक तो प्राप्त हाथी घोड़े आदि को स्वीकार करना तथा दूसरा निष्पन्न धान्य को निष्पादन करना है। वृद्धि तथा भोग आदि का व्यापार दिखाने के लिये वर्धन शब्द लिया गया है।

डॉ0 रामचन्द्र वर्मा शास्त्री के अनुसार कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र से अध्यक्ष प्रचार अधिसूत्र में 36 विषयों का निरुपण किया है जिसमें से कुछ इस प्रकार हैं – राज्य संरक्षण, भूमि संरक्षण, नागरिकों के संरक्षण के नियम, दुर्गों के निर्माण का विधान, रातकर की वसूली, मुख्य लेखाधिकारी के कार्यालय के नियम, आदि सभी अर्थ के साधनों के रूप में जाने जाय। कौटिल्य के अनुसार विद्या तथा अविद्ध का सीधा सम्बन्ध भी अर्थ अर्जन से है। अविद्या ये अधिक अर्जन से जुड़ा है।

काम

महर्षि वात्स्यायन के अनुसार,**श्रोत्रत्वचच्क्षुर्जिह्वा ध्राणानामात्म संयुक्ते नमन साधिष्ठितानां स्वेषु स्वेषु विषयेष्जानुकूल्यतः प्रवृतिः कामः।**
स्पर्शविशेषविषयात्तवस्यामिमानिकसुखानुविद्धा।
फलवत्यर्थप्रलीतिःप्राधान्यात्कामःतंकामसूत्रान्नगरिकजनसमवायच्च प्रतिपद्येत।
एषां समवाये पूर्वः पूर्वो मरियान् अर्थस्व राज्ञः।
तन्मूलवाल्लोकयात्रायाः।
वेश्यायाश्वेतित्रिवर्गप्रतिपत्तिः।

अर्थात् काम ज्ञान के माध्यमों का उल्लेख करते हुये कहा गया है कि आत्मा से संयुक्त मन से अधिष्ठित तत्व, चक्षु, जिव्हा, तथा ध्राण तथा इन्द्रियों के साथ अपने अपने विषय – शब्द, स्पर्श, रूप, रस, तथा गंध में अनुकूल रूप से प्रवृत्ति 'काम' है। इसके अलावा स्पर्श से प्राप्त अभिमानिक सुख के साथ अनुबद्ध फलव्रत अर्थ प्रीतति काम कहलाता है। इसके अलावा अर्थ, धर्म तथा काम की तुलनात्मक श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुये कहा गया है कि त्रिवर्ग समुदाय में पर से पूर्व श्रेष्ठ है। काम से श्रेष्ठ अर्थ है तथा अर्थ से श्रेष्ठ धर्म है। परन्तु व्यक्ति व्यक्ति के अनुसार यह अलग–अलग होता है। पण्डित माध्वाचार्य के अनुसार विषयभेद के अनुसार काम दो प्रकार का होता है। इनमें से प्रथम को सामान्य काम कहते हैं। जब आत्मा की

शाब्दिक विषयों के भोगने की इच्छा होती है तो उस समय आत्मा का प्रयत्न गुण उत्पन्न होता है।

अर्थात! आत्मा सर्वप्रथम मन से संयुक्त होती है तथा मन विषयों से। स्रोत, त्वच, चक्ष, जिव्हा तथा ध्राण इन्द्रिय की क्रमशः स्पर्श, रूप, रस, गन्ध में प्रवृत्त होते हैं। काम की इस प्रकृति में न्याय वैशेषिक मत अधिक झलकता है। इसके अनुसार शब्दादि विषयणी बुद्धि ही विषयों के भोग के स्वभाव वाली बुद्धि ही विषयों के भोग वाली स्वभाव वाली होने के कारण उपचार से कम कही जाती है। अर्थात् आत्मा बुद्धि के द्वारा विषयों को भोगता हुआ सुख को अनुभव करता है। जो सुख है सामान्य रूप से वही काम है। पंडित रामचन्द्रशास्त्री के अनुसार, आत्मा का मुख्य रूप निर्विषयक ज्ञान है जो बाह्य पदार्थों को अपने में समाहित करने से सविषपिक बन जाता है। इस प्रकार ज्ञान में किसी विषय के प्रवेश होने की शक्ति ही अविद्या है। इसी अविद्या में विषय बनकर प्रविष्ट होने वाला तत्व काम है।

त्रिवर्ग प्राप्ति के उपाय

महर्षि वात्स्यायन के अनुसार जो मनुष्य अपने जीवन में त्रिवर्ग की प्राप्ति के लिये उपायों की जो चर्चा की है उसके लिये उन्होंने सर्वप्रथम मानव जीवन को 100 वर्ष में बाँटा है। जीवन काल से बाल्यावस्था 0 वर्ष से 16 वर्ष तक। यौवनावस्था 16 से 70 वर्ष तक, 70 से 100 वर्ष तक की आयु को वृद्धावस्था में विभक्त किया है। इसके अलावा उन्होंने अर्थ, धर्म, काम को एक दूसरे से बाँधकर उनका सेवन इस ढ़ंग से करना चाहिये कि वे परस्पर एक दूसरे के बाधक न बनें। महर्षि वात्स्यायन कहते हैं कि बाल्यावस्था से विद्या ग्रहण जैसा प्रयोजन सिद्ध करें तथा यौवन में गृहस्थ आश्रम में काम का सेवन करते हुये सन्तानोत्पत्ति करें और सुख प्राप्ति करें और वृद्धावस्था में मोक्ष का अनुष्ठान करें। इसके अलावा यह चेतावनी दी गई है कि आयु अनित्य है। अतः मनुष्य को यथासम्भव त्रिवर्ग का सेवन करना चाहिए और विद्याग्रहण में ब्रह्मचर्य का सेवन करना चाहिए।

पंडित माध्वाचार्य ने वात्स्यायन के सूत्रों की विवेचना करते हुये कहा है कि विचारशील व्यक्ति को आयु के अनुसार उचित रीति से विभाग करके धर्म, अर्थ तथा काम का सेवन करना चाहिये और इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिये कि इन तीनों की प्राप्ति के समय किसी अन्य व्यक्ति तथा प्राणी को हानि न हो।

आधुनिक मनोविज्ञान मानव विकास को विकास की दृष्टि से चार भागों में विभाजित करता है – शैशवास्था, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था और प्रौढ़ावस्था किन्तु इस विभाजन में स्त्रियों को पुरुषों से पृथक नहीं किया गया है। प्राचीन भारत में जो विभाजन किया गया था वह आयुर्वेद पर आधारित था और स्त्री तथा पुरुषों की अवस्थाओं को पृथक–पृथक रखा गया था।

वात्स्यायन का कहना है कि इस प्रकार अर्थ, धर्म, काम की प्राप्ति समान रूप से करने के लिये व्यक्ति को प्रयत्नशील रहना चाहिये वहीं व्यक्ति दोनों ही लोकों अर्थात् इहलोक तथा परलोक में सुख प्राप्त करता है। व्यक्ति को त्रिवर्ग का सेवन इस प्रकार करना चाहिये कि एक पुरुषार्थ दूसरे में बाधक न बने। उदाहरणार्थ – धर्म को प्रमुख रखते हुये ही धनोपार्जन करना चाहिये, इसमें अनुचित साधनों का सर्वदा त्याग करना चाहिये। इसी प्रकार धर्म की उपेक्षा किये बिना ही काम की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील होना चाहिये।

विवेकी व्यक्ति केवल वही कर्म करते हैं जो परलोक में सद्गति देने वाला होता है तथा एक दूसरे से अर्थात् धर्म का अर्थ से अथवा काम से, अर्थ का धर्म से अथवा काम से, अथवा दोनों से किसी प्रकार का कोई विरोध न हो कोई एक किसी में बाधक न होकर साधक हो ऐसा ही कार्य उचित और शास्त्र समर्थित होता है।

निष्कर्ष

महर्षि वात्स्यायन के त्रिवर्ग – धर्म, अर्थ और काम तीनों एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े हैं कि उन्हें प्रथक किया जाना सम्भव नहीं है। अर्थ और धर्म की तरह काम भी एक पुरुषार्थ है और इन तीनों का आधार भी वेद ही हैं। धर्म, अर्थ और काम की दृष्टि से वात्स्यायन ने मनुष्य की शतवर्षीय आयु को तीन भागों में बाँटा है अर्थात् बाल्यावस्था में विद्याग्रहण तथा अन्य अर्थों का अर्जन करना चाहिए, काम का सेवन युवावस्था में करना चाहिए तथा धर्म और मोक्ष का सेवन वृद्धावस्था में करना चाहिए तथा विद्याग्रहण के लिए ब्रह्मचर्य का ही पालन करना चाहिए।

महर्षि वात्स्यायन के अनुसार सांसारिक सुख ही मानव जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य जो धर्म, अर्थ और काम के अधिकार तथा प्रयोग पर निर्भर करता है। अतः जीवन में सफलता के आकांक्षी प्रत्येक मनुष्य को वात्स्यायन के त्रिवर्ग का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पण्डित माधवाचार्य : कामसूत्रम् (भाग–2), खेमराज श्री कृष्णदास प्रकाशन, बम्बई–4, 1999
2. उपेन्द्र वर्मा : कामसूत्र, एसोसिएटेड प्रैस, सिण्डीकेट
3. जे0के0 वर्मा : कामसूत्र, राजा पॉकेट बुक्स, बुराड़ी, दिल्ली–84, 2007
4. डॉ0 रामचन्द्र वर्माशास्त्री : कामसूत्र, मनोज पब्लिकेशन, चाँदनी चौक,दिल्ली–6, 2008
5. जीवन के लिए शिक्षा, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों हेतु पारिवारिक स्वास्थ्य एवं जीवन–कलाओं की शिक्षा का गाइड, उ0प्र0 शासन
6. राज्य माध्यमिक शिक्षकों की कार्य–पुस्तिका : विद्यालय एड्स शिक्षा कार्यक्रम, यूनिसेफ, यूनिसेफ भवन 73, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली
7. शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
8. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49),शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार,नई दिल्ली
9. Research in Education, Best J.W., New Delhi
10. S.V.C. Arya: The Fourth Indian Year Book of Education, New Delhi, Jan. 1972.
11. Encyclopedia X. Xarris, Chistrew: Encyclopedia of Educational Research, New York,The Macmillan Company, Third Edition, 1960.
12. Educational Ideas and Institutions in Ancient India: Janki Prakashan,Patna, 1979.